

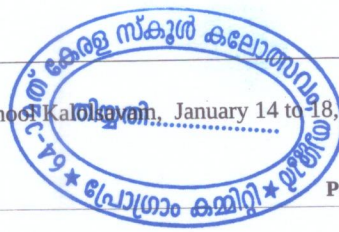
प्रादी की वाइस

me

कंधों पर उसकी बजान जिस्म का वाइस;
आँसू मेरी आँखों से नहीं;
रूह से बहने लगा।
दूक ने कुछ पूँ सिखाया,
साँकर भी तुझे चाहना पड़ता है।

कुछ प्रेम रोसा होता है,
जो पूरा होकर भी अधूरा रह जाता है।
सब दिन चाँद मेरी जिक्र करती थी,
वो दिन रात कुछ ज्यादा ही रोशन होते;
पर आज आसमान में चाँद ही नहीं थी।

हम एक साथ अपने भविष्य के सपने देखे
पर कुछ सपने आँखों में ही मर जाते हैं।
अंधारे से लड़ते-लड़ते,
तुम खुद ही रोशनी बन गए।



अब तुम इतनी पास होकर भी दूर हैं,
और मैं दूर होकर भी सिर्फ तारा हूँ।

कुछ पल रासा होती है,
जब आसोशियाँ शब्दों से भारी होती हैं।
अब तुम मेरे साथ नहीं,
फिर भी मेरी सारी दुआ तुझसे शुरू होती है।
मेरी कंधों इसकी शरीर;
और पादों से सुन्न हो गया।

अब मैं भीड़ में भी अकेला हूँ,
शाब्द में खुद से ही बिछड़ गया हूँ।
रातें लंबी नहीं होते,
बस पादों सोने नहीं देती हैं।
दिन-रात मेरी मन
तुम्हारी पादों से भरी रहती है।

धीरे-धीरे तुझ मेरी कंधों से उतारा,
तुम्हारी बेजान जिस्म;
मिट्टी से मिल गया।



64th Kerala School Kalashpatti, January 14 to 18, 2026, Thrissur



Item Code: 958

Participant Code: 038

अब मंत्री कंदा भारी नही प
पर मंत्री दिल भी-

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).